Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 9, October-2018, ISSN 2230-7540

मध्यकालीन भारत में धर्म

Nirmala*

Assistant Professor, Vaish Girls College, Samalkha, Haryana

शोध सारः भारत शुरू से ही एक विविध धर्मों वाला देश रहा है। जिसकी विशेषता उसकी विभिन्न धार्मिक प्रथाएं और विश्वास हैं। भारत के पूर्ण इतिहास के दौरान धर्म का यहाँ की संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सभी धर्मो के प्रति हिन्दू धर्म का अतिथ्यभाव रहा है। इसी कारण भारत में समय - समय पर आए व्यापारियों, यात्रियों और यहाँ तक कि आक्रमणकारियों और विजेताओं द्वारा लाए गए धर्मो को भी आत्मसात कर लिया गया। मध्यकाल में भारत में विभिन्न धर्मों जैसे हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिक्ख धर्म, ईसाई धर्म व पारसी धर्म विद्यमान थे। इनमें से कुछ का विकास चरम पर था तो कुछ अल्पमात्रा में मौजूद थे। मध्यकाल में भक्ति आंदोलन व सूफी आंदोलन ने इन विभिन्न धर्मों के मतभेदों को खत्म करके धार्मिक सहिष्णुता व समन्वय लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। इससे सामाजिक समानता के साथ - साथ राष्ट्रीय एकता के प्रयास शुरू हुए।

----------X----------

मध्यकालीन भारत में हिन्दू धर्म पहले से ही विद्यमान था। मुस्लिम धर्म की शुरूआत मुहम्मद गौरी के द्वारा मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना से हुई। गौरी ने मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के लिए ही भारत पर आक्रमण किए थे। असफलताओं के बाद भी उसने साहस एवं धैर्य से काम लेते हुए भारत में मुस्लिम साम्राज्य की नींव रखी। इसके बाद मुस्लिम धर्म को कुतुबुदीन ऐबक ने आगे बढाया। सल्तनत युग में इस्लाम धर्म राजधर्म था। अत: इस्लाम का प्रसार करना प्रत्येक सुल्तान का कर्तव्य माना जाता था। उन्होंने इस्लाम धर्म का प्रसार करने के लिए मस्जिद व मुस्लिम शैली की प्रधानता वाली इमारतें बनानी शुरू कर दी। मुसलमानों के भारत आगमन के साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति में अत्यधिक परिवर्तन हुए। हिन्दू संस्कृति शिथिल पड़ चुकी थी तथा उसमें मुसलमानों को अपने अंदर मिलाने की क्षमता नहीं थी। इसके पश्चात् भी हिन्दू संस्कृति में समन्वय की प्रवृत्ति थी। हिन्दू इस्लाम के एकेश्वरवाद से तथा मुसलमान हिन्दू तत्व ज्ञान से प्रभावित हुए। धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे के निकट आने लगे।

हिन्दू मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय की एक महत्वपूर्ण देन भक्ति आन्दोलन है। भक्ति शब्द संस्कृत भाषा के "भज" शब्द से बना है। जिसका अर्थ है भजना अथवा उपासना करना। भक्ति में कोई भेदभाव नहीं होता। भक्ति आन्दोलन की तुलना यूरोप के धर्मसुधार आन्दोलन से की जाती है। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है, "हे अर्जुन जो भक्त मुझे मन व बुद्धि समर्पित कर देता है, वह मुझे प्रिय है।" भक्ति परम्परा का आरम्भिक विकास दक्षिण भारत में हुआ। वहां शिव और विष्णु की भक्ति का प्रचार किया। हिन्दू धर्म आई जटिलताओं और बुराईयों से मुक्ति का मार्ग भक्ति आन्दोलन ने दिखाया और हिन्दू धर्म का पुनरूत्थान किया। जिससे सभी प्रकार की असमानताओं से भी मुक्ति मिली। जातिप्रथा के बन्धन ढीले हुए और सामाजिक समानता का संदेश दिया। जिससे सभी जातियों के व्यक्ति इसकी तरफ खिंचे चले आए। मुसलमान भी भक्ति आन्दोलन की तरफ आकर्षित हुए। भक्ति आंदोलन के उदेश्य थे हिन्दू व मुसलमानों में समन्वय लाना और दोनों धर्मों में सुधार करना। भक्ति आदोंलन के प्रमुख संतों में रामानन्द, मीराबाई, कबीरदास, रविदास व गुरू नानक देव जी प्रमुख थे। डॉ. ताराचन्द के अनुसार रामानन्द भक्ति आदोंलन के क्षेत्र में उत्तर व दक्षिण के बीच एक कड़ी एंव सेतु के समान थे। रामानन्द राम के उपासक थे। कबीरदास और रविदास उनके प्रमुख शिष्य थे। उन्होंने जातिप्रथा का विरोध किया। उन्होंने संस्कृत की जगह पर हिन्दी में उपदेश दिए जो जनता को आसानी से समझ में आ गए। उन्होनें स्त्री को भी शिष्या बनाया।

कबीरदास भक्ति आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण संत थे। वह क्रांतिकारी संत थे। उन्होंने हिन्दू व मुसलमानों में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। कबीर वेद और कुरान का आदर करते थे। धार्मिक आडम्बरों पर कुठाराघात किया। सन्त रविदास ने भी बाहरी आडम्बरों व असमानता का विरोध किया और मन की शुद्धता और मानव प्रेम पर बल दिया।

www.ignited.in

गुरू नानक देव जी ने सिक्ख धर्म की स्थापना की। उन्होंने अपने मुस्लिम शिष्य मर्दाना के साथ भारत, श्रीलंका, मक्का व मदीना का भ्रमण करके अपने विचारों का प्रचार किया। जिससे काफी लोग उनके अनुयायी बन गए। उन्होंने भी धार्मिक आडम्बरों का विरोध किया और एकेश्वरवाद का समर्थन किया। उन्होंने कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकार किया। उन्होंने सही मार्गदर्शन के लिए गुरू को महत्व दिया और भक्तों को दान, दया, सत्य, ईमानदारी, नम्रता, नैतिकता एंव मद्यनिषेध आदि गुण अपनाने का उपदेश दिया। नानक जी ने शिष्ट भाषा में समाज की बुराइयों का विरोध किया। उनकी रचनाओं में उर्दू व फारसी के बहुत अधिक शब्द देखने को मिलते हैं। उन्होंने भी हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल देने के साथ - साथ सामाजिक समानता पर भी बल दिया।

उन्होंने कहा "न कोई हिन्दू है, न कोई मुसलमान, सब मनुष्यों का एक ही सद्गुरू ईश्वर है और सब उनके शिष्य हैं।" नानक जी पाप से घृणा करते थे, पापियों से नहीं। उन्होंने नेक कार्यों द्वारा आजीविका कमाने पर बल दिया। वे सूफी सन्तों के समान रहते थे। उन्होंने सिक्ख धर्म का काफी प्रचार किया।

मध्यकाल में सूफीवाद का भी काफी महत्व है। इसके प्रवर्तक मुसलमान सूफी थे जिनमें ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, ख्वाजा कुतुबुद्दीन और निजामुद्दीन औलिया आदि प्रमुख थे। सूफी संतों ने भी हिन्दू - मुसलमानों में एकता लाने का प्रयास किया। सूफी सन्त सादा व निर्मल जीवन बिताते थे। उनका मानना था कि ईश्वर एक है तथा सर्वव्यापी है। ईश्वर मंदिर या मस्जिद नहीं बल्कि मनुष्य के हृदय में रहता है। सूफी आदोंलन के द्वारा आपसी प्यार व भाईचारे पर बल दिया गया। निजामुदीन औलिया ने कहा था, "ओ मुसलमानों, वही इन्सान अल्लाह का प्यारा है, जो उसके बंदो से प्यार करता है। बंदो की सेवा करना इन्सान का पहला प्यार है। इस तरह दोनों सम्प्रदायों में समन्वय स्थापित करने के प्रयास किए गए। हिन्दू व मुस्लिम धर्म के संपर्क के परिणामस्वरूप सत्यपीर, सतनामी व नारायणी जैसे सम्प्रदायों का जन्म हुआ, जो दोनों धर्मों के लिए मान्य थे। सत्यवीर सम्प्रदाय की स्थापना 15वीं सदी में बंगाल के सुल्तान हुसैनशाह ने की।

इसमें हिन्दू मुस्लिम एकता उभयनिष्ठ देवता "सत्यपीर" नाम से प्रतिष्ठित हुई। हिन्दुओं ने उदारतावश मुस्लिम पीरों तथा मजारों की पूजा और मुस्लिम त्यौहारों में भाग लेना शुरू कर दिया। इस तरह मध्यकाल में हिन्दू-मुसलमानों ने एक दूसरे को काफी प्रभावित किया। भारतीय मुस्लिम सूफियों ने जो शांति और अहिंसा के सिद्धांत अपनाए वे ईसाई धर्म, हिन्दू धर्म, जैन धर्म व बौद्ध धर्म की विशेषताएं रही है और उनमें से अंतिम तीन का तो जन्म भारत में हुआ था।

बादशाह अकबर भक्ति व सूफी आदोलनों से काफी प्रभावित हुए और उन्होने सुलहकुल की नीति अपनाई। उन्होने हिन्दू धर्म को भी सम्मान दिया। उन्होनें हिन्दुओं पर लगे तीर्थयात्रा कर व जजिया कर को हटा दिया। हिन्दुओं को पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता दी। उनके त्यौहारों में भाग लेना शुरू कर दिया। उसने गौ-वध निषेध कर दिया। क्योंकि हिन्दु गाय की पूजा करते थे। हिन्दू ग्रन्थों का अनुवाद करने के पृथक विभाग स्थापित किया। रामायण, महाभारत और गीता आदि ग्रन्थों का फारसी भाषा में अनुवाद करवाया। अकबर ने बीरबल, मानसिंह व भगवानदास आदि हिन्दी विद्यवानों को संरक्षण दिया। उसने हिन्दू धर्म में सुधार का भी प्रयास किया। उसने सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या वध आदि कुरीतियों को दूर करने के लिए प्रयास किया। साथ ही विधवा विवाह व अंर्तजातीय विवाह को प्रोत्साहन दिया।

अकबर की इस उदार धार्मिक नीति के कारण हिन्दुओं और मुसलमानों में समन्वय स्थापित हुआ और राष्ट्रीय एकता स्थापित हुई। अकबर ने जैन विद्वान की विद्ता से प्रभावित होकर "जगतगुरू" की उपाधि दी। जैन धर्म से प्रभावित होकर शिकार खेलना व मांस खाना लगभग छोड़ दिया। गौ-वध निषेध कर दिया और वर्ष में 180 दिन पशु-पक्षियों के शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया। पारसी-धर्म गुरू दस्तूर जी मेहरजीराणा से प्रभावित होकर अकबर ने सूर्य और अग्नि की पूजा करना तथा पारसी त्यौहार मनाना शुरू कर दिया। अकबर ने गोवा से ईसाई मिशनरियों को आमन्त्रित किया। उनसे प्रभावित होकर अकबर ने उन्हें गिरजाघर बनाने, सार्वजनिक ढंग से पूजा पाठ करने, अपने त्यौहार मनाने और भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करने की अनुमति दे दी। अकबर ने सभी धर्मों के अच्छे-अच्छे सिद्धांतो को लेकर 'दीने-इलाही' नामक नवीन धर्म की भी स्थापना की थी। अकबर इस मत से सभी धर्मों में समन्वय स्थापित करना चाहता था। इस प्रकार मध्यकालीन भारत में अनेक धर्मों का प्रचलन था तथा समय-समय पर सभी धर्मों के विकास के अवसर उपलब्ध होते रहे। जिससे भारत का धार्मिक व सांस्कृतिक विकास होता रहा।

संदर्भ ग्रन्थ:

1. हरिश्चन्द्र वर्मा, मध्यकालीन भारत (भाग-2)
2. प्रताप सिंह, मध्यकालीन भारत

3. डॉ. मोतीलाल भार्गव, मुगलकालीन भारत का इतिहास

4. एस.एस. नागौरी, मध्यकालीन भारत

5. डॉ. कौलेश्वर राय, भारत का राजनीतिक एंव सांस्कृतिक इतिहास

6. प्रताप सिंह, मुगलकालीन भारत

Corresponding Author

Nirmala*

Assistant Professor, Vaish Girls College, Samalkha, Haryana